विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत **13 सितम्बर 2020**

वर्ग षष्ठ **राजेश कुमार पाण्डेय**

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

पञ्चमः पाठः

सुभाषितम्

शैले - शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे - गजे ।

साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने –वने ।।2।

प्रत्येक पर्वत पर अनमोल रतन नहीं होते, प्रत्येक हाथी के मस्तक में मोती नहीं होती ।सज्जन लोग सब जगह नहीं होते और प्रत्येक बन में चंदन नहीं पाया जाता।।

पुस्तकस्था तु या विधा परहस्तगतं धनम् ।

कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विधा न तद्धनम् ।।3।।

किसी पुस्तक में रखी विद्या और दूसरे के हाथ में गया धन यह दोनों जब जरूरत होती है तो हमारे किसी भी काम में नहीं आती।

नारिकेल समाकारा दृश्यन्तेऽपि हि सज्जनाः ।

अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहराः ।।4

सज्जन व्यक्ति ऋतु फल नारियल के समान बाहर से कठोर और भीतर से कोमल होते हैं इसके विपरीत दुष्ट बेर के समान बाहर से कोमल होते हैं उनके भीतर बीज रूप कटुता होती है।

यथा देशस्तथा भाषा यथा राजा तथा प्रजा ।

यथा भूमिस्तथा तोयं यथा बीजस्तथाङ्कुरः ।।5।।

जैसा देश वैसी बोली जैसा राजा वैसी प्रजा जैसी जमीन वैसा पानी और जैसा बीज वैसा अंकुर होता है।